|  |
| --- |
| 04. Februar 2024 |
| **05. Sonntag im Jahreskreis B** |
| Erste Lesung: Ijob 7, 1-4.6-7; Zweite Lesung:1 Kor 9,16-19.22-23; Evangelium: Mk 1,29-39 |
|  |  |  |
| Eröffnung: | GL 360, 1-2! | Macht weit die Pforten |
|  | GL 427, 1+2 | Herr, deine Güt ist unbegrenzt |
|  | GL 464 | Gott liebt diese Welt |
|  | GL 103 | Dieser Tag ist Christus eigen |
|  |  |  |
| Kyrie: | GL 130 | Herr, erbarme dich |
| Gloria: | GL 131 | Ehre sei Gott in der Höhe |
|  |  |  |
| Antwortgesang: | Ps 147,1-6 |
|  | Kehrvers:  |  |
|  | GL 77, 1 | Der Herr ist erhaben |
|  | GL 60, 1 | Der Herr hat uns befreit |
|  | GL 401 | Lobet den Herren |
|  | oder Lied: |  |
|  | GL 257, 2+3 | Da alles, was der Mensch beginnt |
|  |  |
| Halleluja-Ruf: | GL 174, 7 |  |
|  | Vers: |  |
|  | *Christus hat unsere Leiden auf sich genommen,* |
|  | *unsere Krankheiten hat er getragen.* |
|  |  |
|  |  |  |
| Credo: | GL 354 | Gott ist dreifaltig einer |
|  |  |  |
| Gabenbereitung: | GL 485, 1-4 | O Jesu Christe, wahres Licht |
|  | GL 188, 1-4 | Nimm, o Gott, die Gaben |
|  |  |  |
| Sanctus: | GL 132 | Heilig |
|  |  |  |
| Agnus Dei: | GL 133 | Lamm Gottes |
|  |  |  |
| Danksagung:  | GL 323 | Du hast mein Klagen in Tanzen |
|  | GL 358, 5+7 | Ich danke dir, du wahre Sonne |
|  |  |  |
| Schlusslied: | GL 382, 1+2 | Ein Danklied sei dem Herrn |
|  | GL 395, 1-3 | Den Herren will ich loben |